महात्मा गांधी मिशन विश्वविद्यालय,

छत्रपती संभाजीनगर

सामाजिक विज्ञान और मानविकी संकाय के अंतर्गत पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध का

शोध सार

मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य का संवेदनात्मक अध्ययन : (नारी के विशेष संदर्भ मे)

शोध-छात्रा

मोमना खातून शब्बीर अहमद

एम. ए. हिन्दी, बी. एड.

शोध-निर्देशिका

डॉ. बासमेह शहनाज जाफर

एम. ए. हिन्दी, बी. एड., पीएच.डी.

सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख

भारतीय एवं पाश्चात्य संकाय,

महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, छत्रपती संभाजीनगर

मई - 2025

अ.क्र.	विषयानुक्रमणिका	पृष्ठ क्र.
1.	प्रस्तावना	2
2.	परिकल्पना	3
3.	पूर्ववर्ती शोधकार्य	3
4.	उद्देश्य	4
5.	लेखक परिचय	6
6.	अनुसंधान क्रियाविधी	7
7.	प्रथम अध्याय - मेहरून्निसा परवेज व्यक्तिवत्व और कृतित्व	7
8.	द्वितीय अध्याय - बहुचर्चित लेखिकाएँ तथा मेहरून्निसा परवेज	9
9.	तृतीय अध्याय - मेहरून्निसा परवेज की कहानियों का कथ्यगत अध्ययन	10
10.	चतुर्थ अध्याय - मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन	12
11.	पंचम अध्याय- मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी की समस्याएँ	14
12.	षष्ठम अध्याय - महेरून्निसा परवेज के कथा साहित्य का संवेदनात्मक अध्ययन	16
13.	उपसंहार	20
14.	संदर्भ ग्रंथसूची	29

मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य का संवेदनात्मक अध्ययन : (नारी के विशेष संदर्भ मे)

प्रस्तावना :

भारतेंदु युग में नारी का दृष्टिकोण एवं उसके प्रति दृष्टिकोण दोनों में परिवर्तन आया है हिंदी कथा साहित्य की निरंतर विकासशील परंपरा में अनेक मोडों पर नारी पात्रों ने विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह किया कठुआ, कमजोरियां, प्रताड़नाओं, अंधविश्वासों, रुढिओं-परंपराओं और अत्याचारों के बीच से उभर कर वह ऐतिहासिक क्रम की यथार्थ परिस्थितियों के केंद्रीयभूत हो गई। स्वतंत्रता के पश्चात नारी की और नारी विषयक स्थिति में अनेक परिवर्तन हुए हैं स्वतंत्र्योत्तर नारी संदर्भ और संबंध बदल चुके हैं। विशेषकर सन 1990 के बाद तो परिस्थितियां और भी बदल चुकी हैं।

स्वतंत्र्योत्तर काल से पूर्व तथा स्वतंत्र्योत्तर काल के पश्चात कथा साहित्य में वैविध्यता देखी जा सकती है। एम. ए के दौरान मुझे कथा साहित्य पढ़ने का अवसर मिला इसलिए मेरी इच्छा थी कि पीएचडी का शोध कार्य मै कथा साहित्य पर ही करूँ ।

विषय चयन हेतु मैंने जब अपने प्रोफेसर डॉ. बनसोड मैम के समक्ष प्रस्ताव रखा तो उन्होंने महिला कथाकार के कथा-साहित्य में मेरी रुचि अधिक देखकर मुझे कहा कि किसी आधुनिक महिला साहित्यकार पर काम किया जा सकता है। मैंने इस बारे में पुस्तकालय तथा वेबसाइट पर काफी जानकारी एकत्र की अंत में मुझे मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य पर कार्य करने की इच्छा हुई। यह बात मैंने अपने पीएचडी के निर्देशक डॉ. शहनाज मैम तथा डॉ. अशवद गौहर मैम के समक्ष व्यक्त की और उन्होंने विषय की सराहना करते हुए काम को आगे बढ़ाने में मेरा हौसला बढ़ाया।

परिकल्पना :

मैं साहित्य की विद्यार्थिनी हूं। इस नाते साहित्य की सभी विधाओं में मेरी रुचि होना स्वाभाविक है, कहानी उपन्यासों में अधिक रुचि होने के कारण मुझे मेहरुन्निसा परवेज की लेखनी ने आकर्षित किया। मेहरुन्निसा जी ने समकालीन महिला लेखिकाओं में अपनी अलग पहचान बनाई है, इसलिए मैं उनके उपन्याओ और कहानियों की और आकर्षित हुई और यह शोध कार्य करने का निर्णय किया। "मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य का संवेदनात्मक अध्ययन : (नारी के विशेष संदर्भ मे) इस विषय का चयन किया।

इस विषय चयन के पीछे यही मेरा मन्तव्य रहा है कि सशकत लेखिका के सारे आयाम उभरकर सामने आए तथा उनके लेखन को उचित न्याय मिले।

पूर्ववर्ती शोध कार्य :

मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य पर शोध-कार्य तो हुए है किंतु उनके कथा साहित्य का संवदेनात्मक अध्ययन (नारी के विशेष संदर्भ मे) को लेकर स्वतंत्र रूप में शोध कार्य किसी विश्वविद्यालय मे नहीं हुआ है। मेहरुन्निसा परवेज के कथा-साहित्य पर मेरी जानकारी के अनुसार अब तक निम्नलिखित शोधकर्ताओं ने शोध कार्य किए है |

1) निलेश चौहान - "मेहरुन्निसा परवेज कथा साहित्य एक अनुशीलन" सौराष्ट्र विश्वविद्यालय राजकोट 360005

2) मन्सुरी जाहीरा " मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य मे नारीचेतना महादेवी देसाई समाजसेवा महाविद्यालय गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद 14

3) मिनी पी. "मेहरुन्निसा पखेज के कथा साहित्य में बदलते जीवन मुल्य" कैथलिकेट कॉलेज पत्तनमतिट्टा केरल।

4) प्राशेजा न.म. "मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में चित्रित स्त्री और शोषित वर्ग महात्मा गांधी युनिवर्सिटी कोट्टयायम

5) साजिद जुनैद अनदलिब "मेहरुन्निसा परवेज के कथा-साहित्य मे अभिव्यक्त जन जीवन" अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ

6) मधाले वी. वि "मेहरुन्निसा परवेज के साहित्य में चित्रित समस्याओं का मूल्यांकन" मनीयर आशा।

उद्देश्य :

वर्तमान युग समस्याओं का युग है। मानव जिस समाज में रहता है वाहॅ वहाँ विभिन्न समस्याओं तथा कृतियों का समावेश होता है। व्यक्ति, परिवार, समाज, धर्म, अर्थ, राजनीति तथा अन्य सभी लोकजीवन की संस्थाएँ है। ये सभी क्षेत्र आज भी समस्याओं से घिरे हुए हैं। इन समस्याओं का निर्माण समाज में ही होता है और उनका निराकरण भी समाज में ही होता है। समाज को असंख्य समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इस स्थिति में साहित्यकार इन समस्याओं से अछूता नहीं रह सकता क्योंकि वह भी इसी समाज का हिस्सा है। अतः साहित्यकार इन सभी क्षेत्र को अपनी शक्ति एवं सीमा के अनुसार स्पर्श करता है और समस्याओं का निर्माण करने वाले कारणों को ढूंढ कर समाज के सामने रखता है तथा समाज को उन कारणों पर विचार करने के लिए प्रवृत्त करता है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में घटित हर घटनाओं का यथार्थ प्रतिबिंब होता है उसके व्यक्तित्व के निर्माण में समाज का महत्वपूर्ण योगदान होता है। परिवेश व्यक्ति का पिता कहलाता है, और इस व्यक्ति का समाज के प्रति कुछ उत्तरदायित्व होते हैं। जिसे हर कोई अपने ढंग से पूरा करने की कोशिश करता है। जिसमें साहित्य कला विज्ञान दर्शन आध्यात्म आदि उनके क्षेत्र चल पड़े हैं।

कथाएं मानव जीवन का पूर्ण चित्र है। वह मानव जीवन की यथार्थता को विस्तृत रूप में प्रस्तुत करता है। साथ ही वह पात्रों पर पड़े तत्कलीन परिस्थितियों के प्रभाव को भी दर्शाता है। इसमें व्यक्ति के जीवनानुभव आपबीती बनाकर प्रस्तुत होती है। इसका एक एक पृष्ठ व्यक्ति के जीवन का दस्तावेज होता है।

मेहरुन्निसा परवेज का अनुभव संसार बहुत गहरा है, दर्द की पहचान उन्होंने अपने जीवन यात्रा से ही पाई है। अपने बेटे की मृत्यु ने उन्हें अंधकार में डाल दिया। दूसरों के दर्द को अपने में वे समेट लेती है। क्योंकि उन्होंने अपनी जिंदगी में काफी उतार चढ़ाव का अनुभव किया है इसी वेदना में दूसरे की वेदना और भावनाओं को जोड़कर कथा साहित्य लिखा गया संवेदनात्मक नारी होने के कारण उनका साहित्य भी नई संवेदनाओं से भर गया है।

मेहरुन्निसा परवेज आधुनिक युग की एक सजग लेखिका है। समाज के विभिन्न वर्गों की पीड़ा, वेदना तथा छटपटाहट को अपने साहित्य में उजागर किया है उनकी अधिकांश कृतियाँ नारी समस्याप्रधान है। समाज में स्थित विविध समस्याओं का चित्रण उनके कथा साहित्य में सूक्ष्मता से किया गया है। उन्होंने नारी जीवन की विविध समस्याओं को अपने कथा-साहित्य में उजागर किया इन समस्याओं को उद्घाटित कर उनके कारणों का विवेचन-विश्लेषण करना यही मेरे शोध कार्य विषय की रूपरेखा का प्रयोजन है।

शोध विषय की प्रेरणा :

आज जब महात्मा गांधी मिशन विश्वविद्यालय में मुझे पीएच.डी. करने का अवसर प्रदान किया जा रहा है तो जिस प्रेरणादायक व्यक्तित्व ने मेरा ध्यान आकर्षित किया "मेहरुन्निसा परवेज" इनकी कथाओं ने मुझे झकझोर दिया उस समय मैंने यह निश्चय किया कि मैं मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य का संवेदनात्मक अध्ययनः (नारी के विशेष संदर्भ मे) शोध-विषय पर कार्य करू। मेहरुन्निसा परवेज में मौलिक सृजन की प्रतिभा है

और लेखनी में विशेष बल दिया। कथा-साहित्य को हम सही न्याय तभी दे सकते हैं जब उन पर पड़े संस्कार और उनके विचारों को अच्छी तरह से समझा सके। अतः इस संदर्भ में मुझे मेहरुन्निसा परवेज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्पष्ट करने का नम्र प्रयास करना है। इसके साथ कथा-साहित्य में चित्रित कथ्य तथा शिल्प विधान को गागर में सागर की तरह समेटने का प्रयास किया है।

लेखक परिचय

मध्यप्रदेश के आदिवासी जिला बालाघाट में 1944 में जन्मी सुश्रि मेहरुन्निसा परवेज साहित्यिक पत्रिकाओं को पढ़ते एवं अपने आसपास के वातावरण को देखते हुए वह साहित्यिक लेखन के बहाव में बह चली। मेहरुन्निसा परवेज कहती है "घर में साहित्य का माहौल नहीं था" पर परिस्थितियां ऐसी थी जिन्होंने मेरे मन को साहित्य रचना की ओर प्रेरित किया। परवेज की कहानियों में पारंपरिक धरो की बंदीशे, महिलाओं के संघर्ष, आदिवासी अंचल की समस्याएं बहुत आती हैं। 1969 में उनका पहला उपन्यास "आंखों की दहलीज" प्रकाशित हुआ था, पर उसके बाद के उपन्यास 'कोरजा' और 'अकेला पलाश' ज्यादा चर्चित हुए।

- मेहरुन्निसा परवेज में नारी चेतना। .
- समाज सुधार कार्यों में स्त्रियों की समस्याओं पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है।
- मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में स्त्री की अस्मिता को केंद्रित कर रचनाओं को प्रभावशाली बनाया।
- मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में आदिवासियों में गौण नारी के विविध रूप।

अनुसंधान क्रियाविधि

मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य का संवेदनात्मक अध्ययनः (नारी के विशेष संदर्भ में) विषय शोध प्रबंध के रूप में चुनने के बाद मेरे सामने बड़ी समस्या यह रही कि सामग्री में किस तरह और कैसे संकलित करूं, मेहरुजी का कथा-साहित्य तथा अन्य संदर्भ साहित्य अलग-अलग प्रकाशनों से मुझे प्राप्त होने पर यह शोध विषय की रूपरेषा का कार्य पूर्ण होगा इसलिए इस अनुसंधान क्रियाविधि में विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया है जिसमें गुणात्मक शोध पद्धति द्वारा इस शोध विषय की रूपरेखा को अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान की सरलता हेतु छः अध्यायों में विभक्त किया जो इस प्रकार से है।

1. "मेहरुन्निसा परवेज: व्यक्तित्व और कृतित्व"
2. समकालीन महिला लेखन तथा मेहरुन्निसा परवेज।
3. मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों का कथ्यगत अध्ययन
4. मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन
5. "मेहरुन्निसा परवेज के कथा-साहित्य में नारी की समस्याएं"
6. "मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य का संवेदनात्मक अध्ययन,"

प्रथम अध्याय

"मेहरुन्निसा परवेज व्यक्तित्व और कृतित्व"

प्रथम अध्याय में बहुमुखी प्रतिभा से परिपूर्ण "मेहरुन्निसा परवेजः व्यक्तित्व और कृतित्व" शीर्षक से परिचय दिया है। इस अध्याय में मेहरुन्निसा परवेज के जीवन एवं साहित्य पर प्रकाश डालना मेरा लक्ष्य रहा है। इस अध्याय को तीन भागों में बांटा गया है- जीवन परिचय, व्यक्तित्व के विविध पक्ष और कृतित्व का परिचय दिया है। पहले भाग में उनका जन्म, बचपन, शिक्षा, दाम्पत्य जीवन आदि बातों का उल्लेख किया है। दूसरे भाग

में उनके व्यक्तित्व की विशेषताएं साहित्य में उनका प्रेरणा स्त्रोत, उनके साहित्यक एवं सामाजिक कार्य आदि का परिचय दिया है। तीसरे भाग में उनके उपन्यास, कहानी और लेख एवं संस्मरण का संक्षिप्त रूप में विश्लेषण करने का प्रयास किया। इस अध्याय द्वारा श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज के जीवन और कथा साहित्य के आपसी संबंध को उभारने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष:

मेहरुन्निसा परवेज का जन्म एक संपन्न मुस्लिम परिवार में हुआ है। सामंती मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी उन्होंने आर्थिक बाह्याडंबरों को प्रधानता नहीं दी है। उनका बचपन कई गांवों तथा शहरों में सुखद रूप में व्यतीत हुआ है। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा कन्या विद्यालय जगदलपुर और बी.ए. तक की शिक्षा प्राइवेट स्कूल में प्राप्त की है। उनकी बचपन में शादी हुई थी। उनका पहले पति से तलाक हुआ और उन्होंने दूसरा विवाह प्रेम विवाह किया है। जीवन में विविध संकटों का सामना करते हुए उन्होंने अपना जीवन व्यतीत किया है। उनके व्यक्तित्व में विविधता दृष्टिगत होती है। वे एक परोपकारी, अपनत्व से व्यवहार करने वाली, मंदिरों को मानने वाली, उत्कृष्ट गायिका, सादगी भरा जीवन जीने वाली, दूसरों को सहारा देने वाली, दूसरों को खिलाने पिलाने की शौकीन, आदर्श भारतीय नारी, संस्कृति को मानने वाली सहृदयी, संवेदनशील, अध्ययनशील, तेज स्मरण शक्तिवाली, पढ़ने में तेज, वर्तमान राजनीति के प्रति आक्रोश करने वाली महिला है।

परवेजजी संवेदनशील, नारी मन को जानने वाली, नारी की व्यथा को चित्रित करने वाली सफल लेखिका रही है। उन्होंने नब्बे के आस-पास कहानियों का सृजन किया है। इसके अलावा छः उपन्यासों को लिखकर हिन्दी कथा साहित्य को समृद्ध किया है। वे 'समर' पत्रिका का सफल संपादन कर रही है। उन्होंन जीवन में अनेक अनुभवों को प्राप्त करके कथा लेखन किया है। वे हिन्दी की उत्कृष्ट साहित्यकर्ती है।

द्वितीय अध्याय -

"बहुचर्चित लेखिकाएं तथा मेहरुन्निसा परवेज"

इस अध्याय में मेहरुन्निसा परवेज के साथ अनेक लेखिकाओं का लेखन वर्णन किया जाएगा। बहुचर्चित महिला लेखिका - मालती जोशी, ममता कालिया, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती इत्यादि इन लेखिकाओं के लेखन के साथ मेहरुन्निसा परवेज के लेखन का तुलनात्मक वर्णन करने का मैंने प्रयास किया है।

समकालीन कथाओं में शारीरिकता की उपेक्षा मानसिकता को अधिक उकेरा गया है। कोमल मानवीय सबंध और उनके साथ मन के टूटने की कथा है। एक और नारी इस टूटने से अकेलेपन और रिक्तता के बोझ से दबी है, और दूसरी ओर उनमें अप्रतिम जीजीविषा के दर्शन भी इन लेखिकाओं के कथाओं में होते हैं।

इन लेखिकाओं ने नारी के मन की गहराइयों को जानकर तथा आधुनिक नारियों में अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध लड़ने की मानसिकता का निर्माण अपनी लेखनी में किया है। इन सभी लेखिकाओं के अलावा मेरे ख्याल से मेहरुन्निसा परवेज का स्थान अद्वितीय एवं अत्यंत महत्वपूर्ण है। इनकी कहानियों और उपन्यासों मे नारी, संवेदना , समाज सेवा, बदलते युग की मानसिकता द्वंद और मानव मूल्यों के प्रति सच्ची आस्था व्यक्त हुई है। परिवेश की सत्यता अनुभव का अपनापन, एवं लेखकीय तटस्था उनकी अपनी विशेषता है।

निष्कर्ष:

हिन्दी महिला कहानीकारों में मेहरुन्निसा परवेज जी का विशिष्ट स्थान है। इनके कहानियों में नारी संवेदना, संघर्ष, रीति-रिवाज आदि का चित्रण मिलता है। मेहरुन्निसा जी

एक मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की होते हुए भी उन्हे अनेक समस्याओं व संघर्षों का सामना करना पडा। उन्होंने कुछ अपनी बात यों व्यक्त की हैं- 'मैंने अपनी कलम से नारी की व्यथा लिखी है, बदले में मुझे क्या मिला? इसका ब्यौरा मैं देना नहीं चाहती। बस इतना जानती हूँ की मेरी कहानियों को पढ़कर किसी एक नारी को भी जिंदगी का सच मिल जाए तो यह मेरा ईनाम होगा।" कहा जाता है कि एक औरत ही दूसरी औरत के मन को पहचान सकती है। मेहरून्निसा जी एक औरत होने के नाते सिर्फ औरत को ही नहीं जानती थी बल्कि वह औरत को हर हालत से संघर्ष कराना चाहती है। इस पुरुष समाज से लड़कर आगे आने को कहती है।

तृतीय अध्याय -

"मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों का कथ्यगत अध्ययन"

तृतीय अध्याय में मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों का क्रमानुसार विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियो का समावेश इसी अध्याय में किया है। मेहरुन्निसा जी की कहानियां समाज के किसी एक वर्ग से संबंधित नहीं है। उनकी कहानी मानव जीवन के अनेक पक्षों को उद्घाटित करती है। बदलते हुए परिवेश बिगड़ते रिश्ते रुढ़िओ परंपराओं के प्रति विद्रोह, महानगरीय जीवन, ग्रामीण जीवन तथा बस्तर के आदिवासियों का चित्रण मिलता है। लेखिका ने कहानी के पात्रों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए हैं।

निष्कर्ष:

श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज ने अपनी कहानियों के माध्यम से परिवार में नारी की रात-दिन की विवशताओं, समस्याओं के विभिन्न पहलुओं का अत्यन्त भावुक, करण एवं हृदय-द्रावक चित्रण किया है।

साहित्य के निर्माण में पुरुष का हाथ रहा है, वह सत्य है, किन्तु इस क्षेत्र में नारी की अवगणना नहीं हो सकती क्योंकि नारी पुरुष की अपेक्षा अधिक भावुक, सहनशील तथा संघर्षों का शालिनतापूर्वक सामना करने वाली है।

मेहरूजी ने अपने जीवन में दुःख देखा है इसलिए उनकी कहानियों में वह हिन्दु-मुस्लिम या इसाई की अलग-अलग पीड़ा नहीं हैं। यह दुःख तो समूचे भारतीय जीवन को ध्वनित करने के लिए शायद अलग-अलग परिवेश में कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है।

श्रीमती परवेज की कहानियों की नारी पुरातन और आधुनिक जीवन मूल्यों के बीच त्रिशंकू होकर जी रही है। इनकी नायिका निबंध यौन-संबंध को जीवन का सहज मार्ग समझकर इस पर बढ़ती है तो कहीं किसी एक ही पुरुष को समर्पित होकर उसी की बनकर रह जाने की उत्कट कामना से ग्रसित है। कहीं वह मातृत्व को अपनी स्वतंत्रता में बाधा और भार मानती है, तो कहीं उस मातृत्व को प्राप्त करने के लिए पृथ्वी-आकाश एक कर देना चाहती है, अविवाहित मातृत्व तक भी उसके लिए स्वीकार्य है।

भारतीय नारी इसमें भी सभी वर्गों को लेकर पारिवारिक समस्या ने श्री मेहरूजी को सबसे अधिक मथा है, वह है विवाहोपरांत परिवार में नारी की विवशता। मृत्यु का विशद, प्रभावी और करुण चित्रण श्रीमती मेहरूजी का प्रिय विषय हैं।

श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज ने अपनी प्रारंभिक कहानियों में बस्तर-क्षेत्र के आंचलिक रीति-रिवाजों और उनकी नवयुवतियों में आधुनिकता के प्रति बढ़ती अभिरुची को वाणी दी है। कालान्तर की कहानियों में उन्होंने मध्यवर्ग की नारी को केन्द्र में रखकर जटिल सामाजिक संरचना में स्त्री की नियति और स्थिति को मर्मस्पर्शी रीति से उजागर करने का सार्थक यत्न किया है।

चतुर्थ अध्याय -

"मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन"

इस अध्याय में लेखिका के उपन्यासों को संक्षिप्त कथावस्तु देकर उपन्यासों का समीक्षात्मक विवेचन किया गया है। मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों का विस्तृत विवरण दिया गया है। उपन्यास मानव जीवन का पूर्ण चित्र है। जिसमे अनेक उपेक्षित तत्वों का समावेश होता रहता है। उपन्यास यह एक ऐसी लचीली साहित्य विधा है जिसमे लेखिका ने जीवन की अनुभूतीयों और जटिल भावनाओं का अध्ययन किया है लेखिका के इन उपन्यासो का कथ्यगत अध्ययन किया है।

- **आंखों की दहलीज (1969)**
- **उसका घर (1972)**
- **कोरजा (1977)**
- **अकेला पलाश (1981)**
- **समरांगण (2002)**
- **पासंग (2004)**

निष्कर्ष :-

"आंखों की दहलीज " (1969) मेहरुन्निसा परवेज का यह पहला उपन्यास है। यह उपन्यास तालियां की आत्मकथा है। इस उपन्यास में नारी के सहज प्रेम का अतृप्त रह जाना! अपने आप को परिपूर्ण ना पाना उसके लिए बहुत बड़ा कलंक होता है, और वह इस कलंक से बचने के लिए किसी भी स्तर पर जाने के लिए तैयार रहती है, तालिया के वास्तविक पिड़ा उसकी आत्मग्लानि का मनोवैज्ञानिक चित्रण है।

"उसका घर" (1972) श्रीमती परवेज का यह दूसरा उपन्यास है। यह उपन्यास 'ऐलमा नामक नायिका की आत्मकथा है। ऐलमा एक ऐसी नारी है, जो अपने घर की तलाश में भटकती रहती है। वह घर जिसे वह अपना कह सके। लेकिन अंत तक उसे अपना घर नहीं मिलता। इस उपन्यास के सभी नारी पात्रों की दशा एक ही समान है। इसमें यौन शोषण और संयुक्त परिवार विघटन का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास में नारी के आंतरिक ऊर्जा को व्यंजित किया है। इसमें परीत्यक्ता नारी की नियति, नारी पुरुष संबंधों में आया हुआ नया दृष्टिकोण, आर्थिक विशेषता, तथा उसके परिणाम आदि बातों को मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है।

“कोरजा" (1977) श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज का यह उपन्यास नारी प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास में बस्तर जिले के कस्बो के माध्यम से निम्न मध्यम वर्गीय परिवारों में व्याप्त भूख, घुटन, पीड़ा, शोषण, सेक्स, मजबूरी, तनाव, गरीबी, स्वार्थ आदि का वर्णन किया है। इस उपन्यास में जगदलपुर और उसके आसपास के इलाकों को चुना है। लेकिन यह स्थितियां भारत के किसी भी गांव या कस्बे की हो सकती है। इस समाज में नारी के मन और तन पर होने वाले अत्याचार कितने भी बडे और भयावा होते हैं, यह लेखिका ने बड़े ही सुक्ष्म ढंग से तथा विविध पक्षों को दर्शाया है।

“अकेला पलाश " (1981) इस उपन्यास में मेहरुन्निसा परवेज ने बेमेल विवाह से अपनी जीवन में आए हुए ठंडेपन की समस्या को चित्रित किया है। इस उपन्यास में लेखिका टूटते बिखरते मूल्यों को अंकित करते हुए नए मूल्यों की और आशावादी दृष्टि से देखा है। इस उपन्यास की मुख्य पात्र तहमीना दुरीज एक अध्यक्ष के रूप में कार्यरत है। वहां अनेक रूपों का सामना होता जो अपनी समस्याओं में गिरे होकर राह तलाशते हैं। इस उपन्यास में विवाह बाह्य संबंध अंतरजातीय विवाह विवाहित जीवन की समस्याएं, ऊंचे ओहदे पर कार्यरत नारी की समस्याएं, बेकारी आदि समस्याओं, को चित्रित किया है।

"समरांगण " (2002) श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज का यह उपन्यास नायक प्रधान होकर भी स्त्री जीवन के अनेक रूप देखते हुए महसूस होता है कि कई आघात, कई विपत्तियों को हर समय संभालती, संवारती रहती है। स्त्री अपने दुखों को आंसू में बहाती है, कभी वह दुख से टूटती हुई लगती है। वह स्वयं को अपने जीवन श्रद्धा के आधार पर संभाल लेती है इस उपन्यास में स्त्री जीने की तीव्र प्रेरणा है । इस उपन्यास का नायक गोपीलाल भी अपने परिवार में अकेला रह जाता है गोपीलाल नर्मदा के तट पर खाली हाथ आता है इस तट पर वैभव प्राप्त करता है। कालानुसार वहीं पर अपना सब कुछ छोड़ जीवन में नया मोड़ देते हैं।

"पासंग" (2004) श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज का यह उपन्यास नई व्यथा को चित्रित करने वाला उपन्यास है। इसके मुख्य पात्र कनी, कुलसुम और बनोआपा की व्यथा को अंकित किया गया है। इस उपन्यास में कनी की जिंदगी हमेशा दादी और अम्मा के बीच पासंग बनकर रहती है तराजू को संतुलित करने वाली वह एक मात्र पासंग है । कनी वह दोनों के बीच पासंग बनकर रह जाती है !

पंचम अध्याय -

"मेहरुन्निसा परवेज के कथा-साहित्य में नारी की समस्याएं"

मेहरुन्निसा परवेज के नारी पात्रों की सामाजिक पारिवारिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक समस्याएं हैं, जिनके अंतर्गत विवाह पूर्व नारी की दशा विधवा समस्या अनमेल विवाह और विवाहित लड़कियां, दहेज प्रथा, बलात्कार, संयुक्त परिवारों की समस्या, विस्तृत परिवार की समस्या, पति-पत्नी के बदलते संबंध, पुत्र की चाहत, आर्थिक पराश्रीयता, बेरोजगारी, गरीबी एवं महंगाई की समस्याएं, इसके अतिरिक्त प्रजातंत्र, पूंजीवाद, राजनीतिक समस्याएं, कामकाजी नारी, अधिकार के प्रति सजग तथा आत्म सम्मान के लिए संघर्ष करती नारी के स्वरूप को लेखिका ने हमारे समक्ष रखा है। नारी की

इस वास्तविक पीड़ा का विस्तार से विश्लेषण विवेचन किया है। नारी शिक्षा के अभाव की समस्या तथा नारी के अकेलेपन की समस्याओं का विश्लेषण विवेचन किया है। इसके अलावा लेखिका ने नारी को अपने अधिकार के लिए संघर्ष करते तथा अपने अधिकारों के प्रति सजग भी बताया है।

मेहरुन्निसा परवेज के नारी पात्रों की वैवाहिक समस्याएं जिनमे विवाहपूर्ण नारी की दशा, अनब्याही युवतियां, विवाहपूर्ण गर्भधारण, दहेज प्रथा, कामकाजी युवती का विवाह न होना, अनमेल विवाह, पत्नी पर संदेह, एक पुरुष अनेक पत्नियां, बांझपन की पीड़ा, पर-स्नेह प्रेम संबंध, नपुंसक पति, विवाह विच्छेदन, पूर्णविवाह आदि और नारी की व्यथाओं को उन्होंने उजागर किया है। इसके अतिरिक्त प्रेम का स्वरूप विधवा समस्याएं, वेश्या समस्याएं आदि बातों का भी स्वरूप लेखिका ने हमारे समक्ष रखा है। नारी की इस वास्तविक पीड़ा का विस्तार से विश्लेषण-विवेचन किया है। नारी शिक्षा के अभाव की समस्या तथा नारी के अकेलेपन की समस्यों का विश्लेषण विवेचन किया।

निष्कर्ष :

मेहरुन्निसा परवेज ने अपने कथा साहित्य में नारी जीवन में आये अनेक मोड़ों को जीवन के यथार्थ पहलुओं से जोड़कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। अपने कथा-साहित्य में उन्होंने निम्न वर्ग, निम्न मध्यवर्ग और मध्य वर्ग के नारी पात्रों का चयन किया है। नारी के शोषण, बदलते परिवेश के साथ उसकी नयी समस्याओं, उसके विभिन्न परंपरागत रूपों नयी पीढ़ी की बदलती हुई आकांक्षाओं के अनुरूप नारी का संघर्षात्मक एवं विद्रोही स्वरूप उसके आक्रोश और अधिकारों के प्रति सजगता को उन्होंने वाणी दी है।

मेहरुन्निसा परवेज ने इस बात से इन्कार नही किया है कि शिक्षा के प्रसार के बावजूद भी अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, पर्दाप्रथा, विधवा समस्या, नारी शोषण आदि से नारी मुक्त नहीं हो पायी है। इसके विरोध में समाज सुधारकों ने पिछली सदी से ही जंग शुरू

कर दी थी लेकिन बदलते परीवेश के साथ समस्याओ ने अपना रूप भी बदल लिया है। नारी को भोग्या समझे जाने की मानसिकता आज पूरी शिद्दत के साथ कायम है इसलिए नारी के प्रति शोषण ने एक भीषण रूप धारण कर लिया है। जब वह चार दिवारी में कैद थी तब उसका शोषण घर में ही होता था लेकिन उसका कार्य क्षेत्र बढ़ने से उसके शोषित होने की संभवनाएँ भी बढ़ गयी हैं। समाज में व्याप्त इन अनाचारों का वर्णन लेखिका ने मर्मस्पर्शी रूप से किया है।

नारी के व्यक्तित्व, अस्तित्व उसकी छटपटाहट, स्वतंत्र विचार, उसकी पीड़ा आदि को मेहरुन्निसा परवेज ने अपने कथा साहित्य में उद्घाटित किया है। स्त्रियों की व्यक्तिगत, परिवेशगत, मानसिक एवं शारीरिक समस्याओं को उन्होंने व्यापक अभिव्यक्ति दी है। ऐसी नारी पात्रों का वर्णन है जो परंपरागत होते हुये भी परम्परागत नहीं हैं। आधुनिकता और परंपरा के बीच आज की नारी जूझ रहीं है और मेहरुन्निसा परवेज के नारी इन सबसे बाहर निकलने की राह ढूंढ रही हैं।

षष्ठ अध्याय -

"मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य का संवेदनात्मक अध्ययन"

इस अध्याय में भाषगत विशेषताओं के साथ-साथ संवेदनात्मक विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। मेहरुन्निसा जी की सभी कथाएँ नारी को केंद्र में रखकर ली गई है। इसमें नारी के विशेष संदर्भो में जो भी समस्याँए है तो उसी में उसका समाधान देखेंगे। कहावतें-मुहावरे के माध्यम से प्रकाश डालना मेरा नम्र प्रयत्न है। कथा साहित्य की नारी विशेष की जो भी समस्याँए वहाँ उजागर हुई उसे आज की नारी के संदर्भ में आज के समय के अनुसार संवेदन किया नारी के विशेष रूपों को प्रस्तुत किया।

इस अध्याय के अंतर्गत मेहरुन्निसा परवेज की कथाओं की भाषा में भाषिक गुण जैसे भाषा शैली बिंबात्मक भाषा, प्रतीकात्मकता भाषा, आंचलिक भाषा, अलंकारिक, वर्णनात्मक भाषा, संवादात्मक, मनोविश्लेषणत्मक शैली नाटकीय शैली आदि का उदाहरण सहित संवेदनात्मक अध्ययन तथा विवेचन किया गया है।

निष्कर्ष :

मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य के पात्र महानगरी ईसाई मुस्लिम आदिवासी उच्च वर्ग, मध्य वर्ग, निम्न वर्ग के प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र है मेहरुन्निसा परवेज ने चरित्र चित्रण के लिए विभिन्न शैलियों तथा भाषाओं का प्रयोग किया है जैसे रावण कहानी में अभिनयात्मक शैली का प्रयोग किया है। फाल्गुनी कहानी में कथात्मक विधा का प्रयोग किया है। उसका घर उपन्यास में मनोविश्लेषणत्मक तथा मनोवैज्ञानिक शैली का प्रयोग किया है।

'भोगे हुए दिन', 'उसका घर', 'खुरचन' इन कहानियों में विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है। 'प्राणप्रतिष्ठा' तथा अन्य कहानियों में भी संवादात्मक विधि का प्रयोग किया है। 'टोना' कहानी में विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया है। मेहरुन्निसाजी ने विधि के साथ चरित्र-चित्रण की विशेषताओं को भी अपनी कथाओं में विश्लेषित किया है। कलात्मकता, भावात्मकता, सहृदयता, रचनात्मक मौलिकता, अंतर्द्वन्द्वात्मकता, बौद्धिकता तथा कलात्मकता आदि विशेषताएँ उनकी कथाओं में दृष्टिगत होती है।

कथोपकथन (संवाद) कहानी विधा का महत्वपूर्म तत्व है। कथोपकथन कथावस्तु के विकास में महत्वपूर्ण होते हैं। मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों में कथोपकथन के विविध रूप दृष्टिगत होते हैं- भावात्मक कथोपकथन, सांकेतिक कथोपकथन, नाटकीय कथोपकथन, मनोवैज्ञानिक कथोपकथन तथा उद्देश्यपूर्ण कथोपकथन आदि। उनकी

कहानियों के कथोपकथन में संक्षिप्तता, स्वाभाविकता, उपयुक्तता और अनुकूलता, मार्मिकता आदि गुण मिलते हैं।

मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों तथा उपन्यासों के वातावरण में विविध रूप परिलक्षित होने दिया है। उनकी कहानियों तथा उपन्यासों में वातावरण चित्रण की विविध विशेषताएँ दिखाई देती है। अलंकारिकता, चित्रात्मकता, सूक्ष्मता आदि मेहरुन्निसाजी ने वातावरण को बड़ी कुशलता के साथ सजीव रूप में प्रस्तुत किया है।

अनुसंधान दायरा

ज्ञान सागर में जितना डाला जाए उतना कम होता है, वैसे ही मेहरुन्निसा परवेज जी के साहित्य में से जितना लिया जाए उतना कम है। प्रस्तुत शोध-विषय की रूपरेखा का शीर्षक है "मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य का संवेदनात्मक अध्ययन (नारी के विशेष संदर्भ में) इस विषय के अंतर्गत मेहरुन्निसा परवेज के कथा-साहित्य को लिया है। किसी भी लेखक के साहित्य का अध्ययन करने से पहले उनका व्यक्तित्व और कृतित्व जाना आवश्यक होता है।

'समर लेख नामक साहित्यक त्रिमासिक पत्रिका के संपादिका के रूप में साहित्य सेवा में निमग्न है। मेहरुन्निसा परवेज को भिन्न-भिन्न मान्यताओं पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। मेहरुन्निसा परवेज समाज के शोषकों के खिलाफ खुलकर आवाज उठाती हुई दिखाई देती है इन्होंने कई सामाजिक कार्य भी किए हैं।

वर्ष 1980 ई. मैं मध्यप्रदेश शासन द्वारा इन्हें राष्ट्रीय पारितोषिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। अखिल भारतीय महाराजा वरसिंह देव पुरस्कार इन्हें इनके " कोरजा" उपन्यास के लिए प्रदान किया गया।

- इसी प्रकार उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा इसी उपन्यास के लिए उन्हें सम्मानित किया गया।
- 1995 ई में ढहता कुतुबमीनार कहानी संग्रह के लिए सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार दिया गया।
- 1995 ई में हिन्दी साहित्य सेवा के लिए उनके योगदान पर उन्हें उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण' सम्मान से अलंकृत किया गया है।
- 1995 ई. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के एक सौ पच्चीसवी वर्षगांठ समारोह समीति द्वारा समाज सेवा के लिए उन्हें सम्मानित किया गया।
- 1995 ई. में राष्ट्रभाषा की स्वर्ण जयंती पर छठवे विश्व हिन्दी सम्मेलन (लंदन) में हिन्दी भाषा एवं साहित्य सेवा के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया है।

संपादन :

मेहरुन्निसा परवेज के सुख और शांति भरे जीवन में दुःख के बादल भी कभी-कभी मंडराते रहे। उनका सत्रह वर्षीय पुत्र समर प्रसाद की अचानक मृत्यु से. वह मानसिक रूप से बिखर गई। इसी पुत्र की स्मृति में 'समर लोक' नामक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन व प्रकाशन 1998 ई में आरंभ हुआ। यह पत्रिका एक माँ की रचनात्मक समर तर्पण है। अब उन्होंने पूरी तरह से अपने आपको उस पत्रिका को समर्पित कर दिया है।

सामाजिक कार्य :

- आदिवासी एवं महिलाओं की सामाजिक समस्याओं के प्रति इनकी विशेष रुचि है। वर्ष 1974 में ये बाल एवं कल्याण परियोजना जिला बस्तर की अध्यक्ष रहीं।
- 1975 ई. में आकाशवाणी सलाहकार समिति की सदस्य बनी।

- 1977 में बस्तर जिले की और से समाज कल्याण परिषद् (मध्य प्रदेश) की सदस्या नियुक्त हुई। बाद में जिले की महिला कांग्रेस की अध्यक्ष भी रहीं।

इस प्रकार से इन्होंने सामाजिक कार्य में अपने आप को समर्पित किया था और इन्होंने हर गरीब और आदिवासी महिलाओं की समस्याओं को शोषित जातियों की सामान्य समस्याओं को सुलझाया है।

निष्कर्ष :

शोध विषय की रूपरेखा के अंत में एक परिशिष्ट देने का प्रयास किया है जो आधार ग्रन्थ, सहायक ग्रन्थ, पत्र-पत्रिकाएं, शब्द-कोश एवं हिन्दी भाषा एवं अन्य भाषा की विभिन्न वेब साईटो का उल्लेख किया जाएगा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विदयावाचस्पति नये अनुच्छेदों को ध्यान में रखते हुए शोध विषय की रूपरेखा को बनाने का प्रयास किया है, यह रूपरेखा अपने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग 'महात्मा गांधी मिशन के विद्यावचस्पति के मानव अनुच्छेदों को ध्यान रखकर लिखा है जो नितांत नवीन है।

उपसंहार

आधुनिक युग में हिंदी साहित्य की गद्य विधा में साहित्य का विकास अधिक मात्रा में हुआ हैं | हिंदी साहित्य में कई प्रतिभावान साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया है | पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं ने भी हिंदी साहित्य को आगे बढ़ने का प्रयास किया है | समकालीन महिला श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है |

मेहरुन्निसा परवेज का व्यक्तित्व गरिमामयी है | पल भर में सादगी और पल भर में गांभीर्य उनके स्वभाव की विशेषता है | कम बोलना अधिक काम करना भी इनकी एक विशेषता है |

मेहरुन्निसा परवेज एक नारी की हिमायती हैं वह नारी की वकालत करनेवाली, उसके मनोमस्तिष्क की पर्तें खोजने वाली और उसके विकसित होते व्यक्तित्व का परिचय देने वाली कथाकार है | मेहरुन्निसा परवेज संकीर्णता से ऊपर उठकर विशाल मानवीयता की प्रतिष्ठापना का आग्रह करती है |

मेहरुन्निसा परवेज का जन्म १० दिसंबर १९४४ को मध्य प्रदेश के बालाघाट में हुआ| मेहरुन्निसा परवेज का जन्म चलती बैलगाड़ी में हुआ था| और मुस्लिम परंपरा के अनुसार मौलाना ने उसका नाम मेहरुन्निसा रखा| मेहरुन्निसा जी के पिताजी का एक गांव में दूसरे गांव तबादला होने के कारण कई जगह संपर्क रहा| बचपन से ही वह अनेक संकटों से सामना करती आई है| मेहरून्निसा जी ने नौंवी कक्षा तक की शिक्षा विद्यालय से प्राप्त की थी| आदर्श भारतीय नारी तथा संस्कृति को मानने वाली है| उनका जीवन सादगी से भरा हुआ है और हमेशा वह दूसरों को सहारा देती रही है|

उन्हें दूसरों को खिलाना-पिलाना अच्छा लगता है| वह पढ़ने में भी तेज है| आज की राजनीति तथा राजनेताओं के प्रति उन्हें चिढ है| उन्हें जीवन में हमेशा गांधी जी की विचारधारा ने प्रभावित किया है| उनका ब्याह छोटी-सी आयु में होने कइ कारण पढाई नहीं हो सकी तो समाजसेवा का कार्य शुरू किया|

उन्हें कई प्रकार के सम्मान एवं उपाधि भी प्राप्त हुई है | उन्होंने १९६३ में लगभग १९ साल की उम्र में ही साहित्य सृजन आरंभ किया था | उन्होंने अपने साहित्य सृजन कि शुरुआत कहानी विधा से की थी | सन १९६३ ई. में दिल्ली से निकलने वाली पत्रिका 'नाईक कहानियाँ' में प्रकाशित हुई | श्रीमती परवेज के अब तक चौदाह कहानी संग्रह एवं छः उपन्यास प्रकाशित हो चुके | इसके अलावा लेखिका 'धर्मयुग', 'सारिका', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'ऋतुचक्र', 'रविवार', 'समरलोग' आदि पत्रिकाओं में निरंतर कहानियां लिख रही हैं |

'आँखों की दहलीज' उपन्यास में नारी की मानसिकता तथा उसके शोषण को उजागर किया है | 'उसका घर' उपन्यास में नारी का घर से बेघर होने की त्रासदी को चित्रित किया है | 'कोरजा'उपन्यास में मुस्लिम नारी की त्रासदी का वर्णन है | 'अकेला

पलाश' में जीवन में आये ठंडेपन की समस्या को चित्रित किया गया है | 'समरांगन' उपन्यास में गोपीलाल के जीवन का संघर्ष चित्रित है | 'पासंग' उपन्यास में नारी व्यथा का अंकन है | इस उपन्यास की नायिका माँ और दादी के बीच का पासंग बनकर रह जाती है |

मेहरुन्निसा जी 'समरलोक' नामक पत्रिका का सफल सम्पादन कर रही है | बेटे के नाम पर यह पत्रिका चल रही है और नवलेखकों को बढ़ावा दे रही है |

इस प्रकार मेहरुन्निसा परवेज ने कहानीकार, उपन्यासकार, सफल संपादक के रूप में हिन्दी जगत को अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है |

अंदर रखी हुई वस्तु, विषयवस्तु, सार या विचार अथवा धारणा का मूल तत्व कथ्य है | मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों का कथ्य महानगरीय संस्कृति, आदिवासी संस्कृति पर आधारित है | मेहरुन्निसा परवेज बस्तर जिले के आदिवासियों में अधिक दिनों तक रही है | आदिवासियों से उनका गहरा संबंध रहा है | मेहरुन्निसा जी आधुनिक कथाकार है | उनकी अधिकतर कहानियां वर्तमान परिस्थिति से जुडी हुई है | उनकी अधिकतर कहानियों में नारी मन की कुंठा और नैराश्य को उजागर किया है | उन्होंने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, बेईमानी, देशसेवा करने वालों की उपेक्षा, धार्मिकता आदि विषयों को अपनी कहानियों का कथ्य बनाया है|

सामाजिक कहानियों में समाज में निर्माण होने वाली समस्या का चित्रण किया है | समाज की रूढ़ि-परंपरा के कारण 'कानिबाट' की नायिका दुलेसा को प्रेम करने के कारण आदिवासी रूढ़ि के अनुसार कठिन से कठिन दंड मिलता है | 'बंद कमरो की सिसकियाँ' की नायिका माँ नहीं बन पाति इस कारण समाज में उसे उपेक्षा मिलती है | 'सोने का बेसर' की कुमकुम का जीवन समाज की न्याय व्यवस्था के कारण बरबाद हो जाता है |

ऊँच-नीच भेद के कारण समाज की निचली श्रेणी के लोगो को दुःख भुगतना पड़ता है | इसका चित्रण मेहरुन्निसा परवेज ने 'जुगनू' नामक कहानी में किया है | सामजिक दंभ के कारण भी आज कई नारियों को फसाया जा रहा है इसका चित्रण मेहरुन्निसा परवेज ने 'जंगली हिरनी', 'देहरी की खातिर' आदि कहानियों में किया है |

समाज व्यवस्था का गिरता हुआ स्तर का चित्रण मेहरुन्निसा परवेज ने 'शनाख्त' कहानी में किया है | शनाख्त का पिता अपनी ही बेटी को वासना का शिकार बनाता है | जमींदारों की शोषण प्रवृत्ति की वजह से गरीब भोली-भाली जनता उनके शोषण से पीड़ित है | नारी का भी शोषण यह लोग करते हैं इसका चित्रण मेहरुन्निसा परवेज ने 'जगार' नामक कहानी में किया है | 'गोमती' पर जमींदार ब्याह के पहले ही दिन अत्याचार करता है | समाज की संकीर्ण वृत्ति के कारण भी कई प्रकार के अन्याय नारी को भुगतने पड़ रहे है | समाज की संकीर्णता के कारण घर से बाहर निकलने के लिए मना किया जाता है | वैश्या समस्याओं का चित्रण 'ओढ़ना', 'खिलावड़ी' आदि कहानियों में किया है |

पारिवारिक कहानियों में परिवार में निर्माण होने वाले बिखराव का चित्रण परवेज जी ने अपनी कहानियों में मार्मिकता से किया है | परिवार में बिखराव कई कारणों से हो रहा है | पति-पत्नी के बीच तीसरे व्यक्ति के आने की वजह परिवार टूट रहा है | इसका चित्रण मेहरुन्निसा परवेज ने अपनी कहानी 'अपने-अपने दायरे' में किया है | पति-पत्नी के बिच दूसरी औरत के प्रवेश के कारण परिवार टूट जाता है | 'ओस में डूबा गुलाब' का नायक (पिता) पहली पत्नी होते हुए भी दूसरा व्याह कर लेता है इस कारण परिवार टूट जाता है | 'ढहता कुतुबमीनार', 'चमड़े का खोल'आदि कहानियों में इसी प्रकार की समस्या दिखाई देती है |

पति-पत्नी के विचारों में असमानता तथा रूचि भिन्नता होने की वजह से दोनों में अनबन होती है | मेहरुन्निसा परवेज ने भी अपनी कई कहानियों में इसका चित्रण किया है | 'बीके हुए क्षण' कहानी का पति भारतीय और पत्नी विदेशी होने के कारण उनमे हमेशा अनबन निर्माण होती है | पति-पत्नी में प्रेम की जगह पर अगर शक निर्माण होता है तो परिवार टूट जाता है | 'आदम और हव्वा' की उमी के प्रेमी की मृत्यु होने की वजह से वह अपने आप को कुंआरी विधवा मानती है और शादी करने से मना करती है | 'जंगली हिरनी', 'सोने का बेसर', 'क्यों नहीं', 'देहरी की खातिर', 'वीराने' आदि कहानियों में नायिकाओं को प्रेम में असफलता मिलती है जिसके कारण उनका जीवन बरबाद होता है | व्यसनाधीन आदमी अगर परिवार में हो तो उसकी वजह से

भीं पति-पत्नी में झगडे,घुटन निर्माण होती है | परिवार के लोगो में आपस में स्नेह न हो तो भी परिवार टूटते हैं | इसका चित्रण लेखिका ने 'उसका घर' में किया है |

"आँखों की देहलीज" (१९६९) मेहरुन्निसा परवेज का यह पहला उपन्यास है | यह उपन्यास तालियां का आत्मकथा है इस उपन्यास में नारी के सहज प्रेम का अतृप्त रह जाना | अपने आप को परिपूर्ण ना पाना उसके लिए बहुत बड़ा कलंक होता है, और वह इस कलंक से बचने के लिए किसी भी स्तर पर जाने के लिए तैयार रहती है, तालिया की वास्तविक पीड़ा उसकी आत्मग्लानि का मनोवैज्ञानिक चित्रण है |

"उसका घर" (१९७२) श्रीमती परवेज का यह दूसरा उपन्यास है यह उपन्यास 'एलमा' नामक नायिका का आत्मकथा है एलमा एक ऐसी नारी है जो अपने घर की तलाश में भटकती रहती है वह घर जिसे वह अपना कह सके लेकिन अंत तक उसे अपना घर नहीं मिलता | इस उपन्यास के सभी नारी पात्रों की दशा एक ही समान है | इसमें यौन शोषण और संयुक्त परिवार विघटन का चित्रण हुआ है इस उपन्यास में नारी के आंतरिक ऊर्जा को व्यंजित किया है | इसमें परित्यक्ता नारी की नियति, नारी पुरुष संबंधो में आया हुआ नया दृष्टिकोण, आर्थिक विशेषता तथा उसके परिणाम आदि बातों को मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है |

"कोरजा" (१९७७) श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज का यह उपन्यास नारी प्रधान उपन्यास है इस उपन्यास में बस्तर जिले के कस्बो के माध्यम से निम्न माध्यम वर्गीय परिवारों में व्याप्त भूख, घुटन, पीड़ा, शोषण, सेक्स, मज़बूरी, तनाव, गरीबी, स्वार्थ आदि का वर्णन किया है इस उपन्यास में जगदलपुर और उसके आसपास इलाकों को चुना है लेकिन यह स्थितियां भारत के किसी भी गांव या कसबे की हो सकती है इस समाज में नारी के मन और तन पर होने वाले अत्याचार कितने भी बच्चे और भैया वह होते हैं यह लेखिका ने बड़े ही सुषमा ढंग से तथा विविध पक्षों को दर्शाया है |

"अकेला पलाश" (१९८१) इस उपन्यास में मेहरुन्निसा परवेज ने बेमेल विवाह से अपनी जीवन में आये हुए ठंडेपन की समस्या को चित्रित किया है इस उपन्यास में लेखी गाने टूटते बिखरते मूल्यों को अंकित करते हुए नए मूल्यों की और आशावादी दृष्टी से देखा है इस उपन्यास की मुख्य पात्र तहमीना दूरिज एक अध्यक्ष के रूप में कार्यरत है

वहां अनेक पात्रों का सामना होता जो अपनी समस्याओं में घिरे होकर राह तलाशते हैं इस उपन्यास में विवाह संबंध अंतरजातीय विवाह, विवाहित जीवन की समस्याएं, ऊँचे ओहदे पर कार्यरत नारी की समस्याएं, बेकरी आदि समस्याओं को चित्रित किया है |

"समरांगण" (२००२) श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज का यह उपन्यास नायक प्रधान होकर भी स्री जीवन के अनेक रूप देखते हुए महसूस होता है की कई आघात, कई विपत्तियों को हर समय संभालती, संवारती रहती है | स्री अपने दुखों को आंसू में बहाती है, कभी वह दुख से टूटती हुई लगती है | वह स्वयं को अपने जीवन श्रद्धा के आधार पर संभाल लेती है इस उपन्यास में स्री जीने की तीव्र प्रेरणा है | इस उपन्यास का नायक गोपीलाल भी अपने परिवार में अकेल रह जाता है गोपीलाल नर्मदा के तट पर खाली हाथ आता है इस तट पर वैभव प्राप्त करता है | कालक्रमनुसार वहीं पर अपना सब कुछ छोड़ जीवन में नया मोड़ देते है |

"पासंग" (२००४) श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज का यह उपन्यास नयी व्यथा को चित्रित करने वाला उपन्यास है इसके मुख्य पात्र कनी, कुलसुम और बनोआपा की व्यथा को अंकित किया गया है | इस उपन्यास में कनी की जिंदगी हमेशा दादी और अम्मा के बिच पासंग बनकर रहती है तराजू को संतुलित करने वाली वह एक मात्र पासंग है | कभी वह दोनों के बिच पासंग बनकर रह जाती है |

साहित्य के निर्माण में पुरुष का हाथ रहा है , यह सत्य है, किन्तु इस क्षेत्र में नारी की अवगणना नहीं हो सकती क्योंकि नारी पुरुष की अपेक्षा अधिक भावुक, सहनशील तथा संघर्षो का शालीनतापूर्वक सामना करने वाली है |

हिन्दी कथा साहित्य में एक प्रकार की ऊब निर्माण हो गई थी | 'नई कहानी' के आंदोलन के ठंडे पड़ने के बाद आम आदमी और यथार्थ की नारेबाजी में कहानी अपना कहानीपन खोती चली जा रही थी | मेहरुजी ने अपने जीवन में दुःख देखा है इसलिए उनकी कहानियों में वह हिन्दू-मुस्लिम या ईसाई अलग-अलग पीड़ा नहीं हैं | यह दुःख तो समूचे भारतीय जीवन को ध्वनित करने के लिए अलग-अलग परिवेश में कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है |

श्रीमती परवेज की कहानियों की नारी पुरातन और आधुनिक जीवन मूल्यों के बीच त्रिशंकु होकर जी रही थी | इनकी नायिका निर्बंध यौन-संबंध को जीवन का सहज मार्ग समझकर इस पर बढ़ती है तो कही किसी एक ही पुरुष को समर्पित होकर उसी की बनकर रह जाने की उत्कट कामना से ग्रसित है | कही वह मातृत्व को अपनी स्वतंत्रता में बाधा और भार मानती है, तो कहीं उस मातृत्व को प्राप्त करने के लिए पृथ्वी-आकाश एक कर देना चाहती है, अविवाहित मातृत्व तक भी उसके लिए स्वीकार्य है |

मुस्लिम समाज में व्याप्त गरीबी और उसमें से निर्माण होने वाले कई सवाल इनकी कहानियों में परिवार में बूढ़ो की दयनीय स्थिति, विधवा नारी का दुःख, बाँझपन की पीड़ा दाम्पत्य जीवन में तीसरे का आना, पति के घर क्षण-क्षण अपमानित होती पत्नी कच्ची उम्र की लड़कियों पर होने वाले अत्याचार पत्नी पर संदेह, रिटायरमेंट की त्रासदी, अनब्याही युवती का दर्द मुस्लिम समाज में नारी दुर्दशा, बेमेल विवाह, नौकरी करनेवाली अविवाहित नारी का शोषण, प्रेम की तीव्र संवेदना, माँ की मानसिक यातनाएँ आदि समस्याएँ देखने को मिलती हैं |

श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज ने अपनी प्रारंभिक कहानियों में बस्तर-क्षेत्र के आंचलिक रीति-रिवाजों और उनकी नवयुवतियों में आधुनिकता के प्रति बढ़ती अभिरुचि को वाणी दी है | कालान्तर की कहानियों में उन्होंने मध्यवर्ग की नारी को केन्द्र में रखकर जटिल सामाजिक संरचना में स्री की नियति और स्थिति को मर्मस्पर्शी रीति से उजागर करने का सार्थक यत्न किया है |

सामाजिक प्रवृत्ति ने कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक और पारिवारिक संबंधो पर उसके प्रभाव के बारे में तरह-तरह के अटकलों को जन्म दिया है | इनके कथा साहित्य में कामकाजी महिलाओं का चित्रण हुआ है | आज के संघर्षमय युग में अर्थ की अपनी विशेष सत्ता-महत्ता और आर्थिक गुत्थी सुलझाने के लिए महिलायें स्वयं नौकरी कर रही है | जब स्री नौकरी करने के लिए घर से बाहर निकली है तो उसे बहुत सारी समस्याओं का सामना करना स्वाभाविक हो गया है | मेहरुन्निसा परवेज का उपन्यास "अकेला पलाश" की तहमीना नौकरी पेशा है तो उसे घर कि जिम्मेदारियों

को भी निभाना है | उसे घर के बच्चों की जिम्मेदारी भी निभानी है साथ ही जिस ओहदे पर है उसे भी |

समय के साथ-साथ समाज में कई परिवर्तन हुए है | फिर भी हमारा समाज अभी तक जाती-पाति के बंधनो में जकड़ा हुआ है | विवाह के समय इस पर विशेष ध्यान दिया जाता है माँ-बाप सजातीय विवाह में अपनी संतान के विवाह में पक्षपाती है | मेहरुन्निसा परवेज ने अंतर्जातीय विवाह का चित्रण किया है |

मेहरुन्निसा परवेज भारतीय संस्कृति की मान्यताओं की हिमायती रही है | आदर्श की स्थापना करने वाली वे परंपराओं की पोषक रही है | अपने साहित्य में भी उन्होंने समाप्त हो रहे परंपरागत आदर्श मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास किया है | इनके आधुनिक पात्र कहीं न कहीं परंपरा से जुड़े हुए है | इनके कथा-साहित्य में निम्नवर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक के जनजीवन का सशक्त चित्रण मिलता है | साम्प्रदायिक अलगाव काफी लम्बे समय से हमारे देश में राष्ट्रीय समस्या के रूप में मौजूद है और दुर्भाग्य से इस समस्या का समाधान हम राजनिति पर खोजने का प्रयास करते रहे है, निश्चय ही इस वास्तविकता को नकारना भी असंभव है की हमारे वर्तमान राजनितिक वातावरण ने इस समस्या को और भी अधिक फैलने दिया है |

इस देश में सब विभिन्न धर्म जाति, वर्ग समुदाय में बटे हुए है | सब एक दूसरे को नोच रहे हैं खसोट रहे हैं, कोई किसी का दोस्त नहीं, कोई किसी का संबंधी नहीं है | बस एक अल्पसंख्यक वर्ग जरूर खुश है मस्त है | जिसका नाम राजनितिक है, जो देशी-विदेशी कुछ नहीं होते है | तभी बड़ी आसानी से घेरा के दालान वाले कमरे बँट जाने पर ये दूसरे के दुःख पर अपनी सत्ता का झंडा गाड़ते हैं |

"वसुधैव कुटुंबकम" की संकल्पना इन के साहित्य में मिलती है | महिलाओं के लिए अलग दुनिया बसाना था पुरुष को खलनायक के रूप में चित्रण न करना दोनों के विशाल मनोभावों का घोतक है | इन्होने यही कहने का प्रयास किया है की स्री भी पुरुष जैसी ही मानव है | उसमें भी भावनाएं है उसे भी अपने क्षेत्र में आगे आने का अवसर प्रदान करें| इनका रुख बहुत ही स्पष्ट संतुलित और व्यवहारिक है |

अभिघात्मकता, नवीनता एवं प्रतीकात्मकता इनकी कहानियों के शीर्षक की विशेषता है | इनकी एक विशेषता यह भी है की इनकी कहानियों या उपन्यासों के प्रारंभ में ही प्रतीकात्मकता का प्रयोग किया है | इनकी भाषा में उर्दू-हिंदी का मिठास दूध में शक्कर की तरह घुल-मिल गया है | इन्होने लोकोक्ति और मुहावरों से अपनी भाषा संवारा है |

निष्कर्ष रूप से यह अनुचित न होगा की समकालीन महिला साहित्यकारों में मेहरुन्निसा परवेज जी ने अपनी अलग पहचान बनायी है | उनके व्यक्तित्व एवं जीवन का प्रभाव साहित्य में साफ़ झलकता है | उन्होंने कहानी, उपन्यास आदि विधाओं में साहित्य सृजन किया है | इसी से उनकी बहुमुखि प्रतिभा का परिचय हमें मिलता है | साहित्य समस्याओं से किसी संवेदनशील साहित्यकार के समान वे भी अछुती नहीं रही है | इन सभी कारणों से समकालीन महिला साहित्यकारों में उनका अपना एक अलग स्थान है इनमे संरचना, कलात्मकता, नवीनता, मौलिकता, ताजगी आदि का अनूठा संगम हुआ है |

संदर्भ ग्रंथसूची :

उपन्यास -

1. अकेला पलाश : मेहरुन्निसा परवेज वाणी प्रकाशन, कमलानगर, दिल्ली - 1100007, प्र.सं.1981
2. आँखों की दहलीज : मेहरुन्निसा परवेज अक्षर प्रकाशन अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-110006, प्र. स. 1969
3. उसका घर : मेहरुन्निसा परवेज नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23 दरियागंज, नई दिल्ली - 110002, प्र. स. 1972
4. कोरजा : मेहरुन्निसा परवेज़ नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23 दरियागंज, नई दिल्ली - 110002, प्र.सं. 1977

5. पासंग : मेहरुन्निसा परवेज वाणी प्रकाशन, कमलानगर, दिल्ली - 1100007, प्र.सं. 2004
6. समरांगण : मेहरुन्निसा परवेज वाणी प्रकाशन, कमलानगर, दिल्ली -1100007, प्र. सं. 2002

कहानी-संग्रह -

1. अम्मा : मेहरुन्निसा परवेज, ज्ञानगंगा प्रकाशन, चावड़ी जार, दिल्ली - 1100066, प्र.सं. 1977
2. अन्तिम चढ़ाई : मेहरुन्निसा परवेज, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली - 110002, प्र. स. 1982
3. अयोध्या से वापसी : मेहरुन्निसा परवेज़, पंचशील, प्रकाशन फिल्म कालोनी, जयपुर -302003, प्र.सं. 1991
4. आदम और हव्वा : मेहरुन्निसा परवेज, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, दिल्ली – 11002, प्र. स. 1992
5. एक और सैलाब : मेहरुन्निसा परवेज, सत्तसाहित्य प्रकाशन चावड़ी बाज़ार, दिल्ली – 110006, प्र. सं. 1991.
6. गलत पुरुष : मेहरुन्निसा परवेज़, नेशनल पब्लिशिंग हाउस 23, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, प्र.सं. 1978
7. टहनियों पर धूप : मेहरुन्निसा परवेज, वाणी प्रकाशन, कमलानगर, दिल्ली - 110007, प्र. स. 1978
8. ढहता कुतुबमीनार : मेहरुन्निसा परवेज़, विद्या विहार, नई दिल्ली, प्र. स. 1993
9. फालगुनी : मेहरुन्निसा परवेज, पराग प्रकाशन वर्णक गल्ली, शाहदरा दिल्ली - 110032, प्र.सं. 1978

10. मेरी बस्तर की कहानियाँ : मेहरुन्निसा परवेज, वाणी प्रकाशन, 21ए, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, प्र.सं. 2006

11. लाल गुलाब : मेहरुन्निसा परवेज, प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-11002, प्र. सं. 2006

12. समर : मेहरुन्निसा परवेज, ग्रंथ अकादमी प्रकाशन, पुराना दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, प्र. स. 1999

13. सोने का बेसर : मेहरुन्निसा परवेज, सत्साहित्य प्रकाशन 205बी, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली - 6 प्र. स. 1991

सहायक ग्रंथ -

1) मेहरुन्निसा परवेज, ऋतुचक्र, पृ.44, अंक-47, 4 मार्च. जून 89

2) मेहरुन्निसा परवेज, सारिका, पृ. 20, अक्टूबर 1972

3) मेहरुन्निसा परवेज, अंतिम चढाई।

4) पुनश्व पत्रिका, पृ. 1161

5) डॉ. नलिम, मैगजीन गर्ग, साहोत्तरी हिन्दी उपन्यास में नारी, पृ 12.

6) डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, समकालीन महिला लेखन, पृ. 125.

पाठ व ग्रंथ सूची :

1) 'आंखों की दहलीज' (सन 1969)

2) 'उसका घर' (सन 1972)

3) 'कोरजा' (सन 1977)

4) 'अकेला पलाश (सन 1981)

5) 'समरांगण' (सन 2002)

6) 'पासंग प्रकाशधीन' (सन 2004)

कहानीयां -

1) 'आदम और हव्वा' कहानीसंग्रह

2) 'टहनियों पर धुप' कहानीसंग्रह

3) 'गलत पुरुष' कहानीसंग्रह

4) 'फाल्गुनी' कहानीसंग्रह

5) 'अंतिम चढाई' कहानीसंग्रह

6) 'सोने का बेसर' कहानीसंग्रह (सन 1991)

7) 'आयोध्या से वापसी' (सन 1991)

8) 'एक और सैलाब' कहानीसंग्रह (सन 1990)

9) 'रिश्ते' कहानीसंग्रह (सन 1992)

10) 'ढहता कुतुबमीनार' कहानीसंग्रह (सन 1993)

11) 'अम्मा' कहानीसंग्रह (सन 1997)

12) 'समर' कहानीसंग्रह (सन 2002)

13) 'लाल गुलाब' कहानीसंग्रह (सन 2006)

14) 'मेरे बस्तर की कहानीया' कहानी संकलन (सन 2006)

पत्रिका -

1) 'पत्थर वाली गली' (सन 1978)

शोध-छात्रा

मोमना खातून शब्बीर अहमद

एम. ए. हिन्दी, बी. एड.

शोध-निर्देशिका

डॉ. बासमेह शहनाज जाफर

एम. ए. हिन्दी, बी. एड., पीएच.डी.

सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख

भारतीय एवं पाश्चात्य संकाय,

महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, छत्रपती संभाजीनगर